पद्मकान्त मालवीय और उनका काव्य—प्रकाशक, शारदा पुस्तक भंडार, १ पोनप्पा रोड, इलाहाबाद, आकर्षक आवरण। अच्छे कागज का संस्करण मूल्य ढाई रुपये।

XI/122 — 20

१

राष्ट्रीय अभिलेखागार
भारत
National Archives of India

पंडित पद्मकान्त मालवीय उन कवियों में हैं जो कविता करते ही नहीं, कवि-सुलभ जीवन जीते भी हैं। मस्ती, बेफिक्री आदि उनके कवि-सुलभ गुण हैं। उनमें यह मस्ती और लापर्वाही जीवन ही के प्रति नहीं, अपनी कविताओं के प्रति भी है। उन्होंने कभी भी अपने 'कवि' को आगे लाने का प्रयास नहीं किया। वे अच्छी कविता ही नहीं करते, पढ़ते भी बहुत अच्छे ढंग से हैं। फिर भी वे कवि सम्मेलनों से दूर रहे। कविताओं के संकलन छपवाये, पर स्वांतःसुखाय। उनके प्रचार की ओर कभी ध्यान नहीं दिया। और इस प्रचार के युग में इस सबका परिणाम यह हुआ कि लोग उन्हें भूल से गये हैं। इसलिए हम कविताओं के इस संकलन का स्वागत करते हैं। पद्मकान्त-जी ने अपनी कविता से कितने ही नवयुवकों को प्रेरणा दी और उनमें कई आज हिंदी के प्रमुख कवि हैं। उन्होंने उस युग में लिखना आरंभ किया था जब द्विवेदी युग प्रायः समाप्त हो रहा था और 'छायावादी' कविता का बोल बाला था। 'छायावाद' को समझने के संस्कार तैयार नहीं हुए थे, किंतु उसकी शब्द माधुरी, नवीनता, गेयता, गूढ़ता और नूतन प्रतीकों के प्रति लोगों में आकर्षण था, यद्यपि वे उसे पूरी तरह से समझ नहीं पाते थे। उसमें सामान्यतः जिस भाषा का प्रयोग होता था, वह अत्यधिक संस्कृत-निष्ठ थी। इस कारण भी बहुत से लोग जो साधारण हिंदी नहीं जानते थे, उसको समझने में असमर्थ थे। छायावाद युग की कविता की भाषा बोलचाल की भाषा से बहुत दूर चली गयी थी। शब्द भंडार तो प्रचुर था, किंतु मुहावरों आदि का प्रयोग नहीं के बराबर होता था। पद्मकान्तजी बोलचाल की सरल हिंदी लेकर आये। उनकी कविता में रस था, ओज था और था राष्ट्रीयता का पुट। वे शीघ्र ही लोकप्रिय हो गये। वे स्वयं अपनी भाषा के बारे में लिखते हैं।

मेरी भाषा में है गंगाजी की बहती हुई रवानी
सभी शब्द पावन हो जाते छूकर जिसका पावन पानी

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

XI/122

भारतीय नारी सी सीधी सादी सुंदर भाषा मेरी

इसमें उर्दू की शोखी है, हिंदी की मधु मिश्रित बानी। और फिर यह गर्वोक्ति :—

भाषा का गौरव पाया है वीणावादिनि के प्रसाद से
जिसे सीखना हो वह आये सीखे हिंदी भाषा मुझसे !

यह तो हुई भाषा की बात। अपनी कविता के संबंध में कहते हैं :—

मेरी कविता में है मेरे जीवन की उठती हुई जवानी
यह सच्ची, यह स्थायी है, और नहीं यह महज कहानी
पश्चिमीय मदिरा के प्रेमी भले पा सकें स्वाद न इसका,
पर इसका सम्मान करेंगे, जो अपने पन के अभिमानी।

पुरानी पीढ़ी के कितने ही साहित्यकारों की भाँति पद्मकान्तजी हिंदी के भक्त होते हुए भी उर्दू के ज्ञाता और उसके काव्य के प्रशंसक हैं। अकबर के तो वे बड़े भक्त हैं।

मेरे ओ कवि अकबर महान
भारत माता के मुकुट-रत्न, तुम कोहेनूर जाज्वल्यमान

सोयी भारत की आत्मा थी
कर पश्चिमीयता-सुरा पान
खोने पर सब थे तुले हुए
अपनापन, गौरव, ज्ञान, मान।

जग उठा तुम्हारी वाणी में भारत का आहत स्वाभिमान !

पद्मकान्त सक्रिय राजनीति में रहे हैं। नेताजी के विश्वस्त अनुयायी थे, अतएव उनकी कविताओं में समसामयिक राजनीति की भी झाँकी होती है। त्रिपुरी कांग्रेस के संबंध में 'त्रिपुरी' नामक कविता की ये पंक्तियाँ देखिए—

कहते हैं गाँधीवादी यह बीमारी भी मक्कारी है
वह लड़ने कैसे आया है जो बिस्तर से भी हिल न सके !
है सत्य असत्याचरण यहाँ, हिंसा का नाम अहिंसा है
फिर क्या ताज्जुब जग का मानव
यदि आपस में हिल-मिल न सके !
'अंग्रेज विदेशी शासक को जीतेंगे प्रेम अहिंसा से'
जिनका दावा था—त्रिपुरी में
वे जीत बोस का दिल न सके।

प्रेम, वियोग, मिलन आदि की कविताएँ सरस और शक्तिशाली हैं। प्रसाद गुण, हृदय पर सीधे चोट करने की क्षमता और भाषा सौष्ठव पद्मकांत की कविताओं के विशेष गुण हैं। इस छोटी सी आलोचना में उनके इस संकलन की विशेषताएँ ठीक तरह से नहीं बतलायी जा सकतीं। जो लोग आजकल की कविताओं को समझने में दिमाग पर जोर लगाते-लगाते थक गये हैं, उन्हें इन हृदयस्पर्शी कविताओं को 'जायका' बदलने के लिए अवश्य पढ़ना चाहिए। कविता-प्रेमियों को उन्हें इसलिए पढ़ना भी आवश्यक है कि वे मालूम करें कि पिछली पीढ़ी में हिंदी कविता की एक ऐसी भी शैली थी जो सर्व-सुलभ थी, और एक ऐसा कवि भी था जो 'वादों' के चक्कर में न पड़कर अपने आसपास के जीवन और देश की दशा से प्रेरित होकर सौष्ठवपूर्ण और सरल हिंदी में हृदयस्पर्शी कविता लिखा करता था।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India